International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.421| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

नरेश महेता के काव्य का विश्लेष्णात्मक अध्ययन

डॉ0 अनीता रानी धर्मपत्नी श्री सज्जन सिंह

मकान न. 207 ब्लॉक न. 1

गॉव चौधरीवास, जिला हिसार, 125001 हरियाणा

हिन्दी साहित्य में काव्य–पुरुष के रूप में विख्यात नरेश मेहता भारतीय साहित्य के उन शीर्षस्थ साहित्यकारों में से एक हैं जिन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से अपनी एक अलग पहचान बनाई। साहित्यकार को समाज का सर्वाधिक संवेदनशील प्राणी माना गया है; वह अपने देखे–सुने–भोगे अनुभवों को ही साहित्य में चित्रित करता है और यदि इस दृष्टि से देखा जाये तो नरेश मेहता त्रिकालदर्शी हैं। वर्तमान को अतीत और भविष्य के मध्य रखकर उसकी महत्ता का ऐसा भव्य और उदात्त चित्र प्रस्तुत करते हैं कि जिसके समकक्ष दूसरा कोई कर ही नही सकता। ऐसे बहुमुखी प्रतिभा–प्रसन्न साहित्यकार ने काव्य के अतिरिक्त उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबंध, यात्रावृत्त आदि विधाओं को भी अपनी लेखनी से धन्य बनाया है। हिन्दी साहित्य में विश्लेषणात्मक शब्द का प्रयोग अधिकत्तर होता है। विश्लेषणात्मक का अर्थ है– विश्लेषण करना। प्रायः साहित्यकार समाज के प्रति चिन्तन करके जो काव्य के माध्यम से अभिव्यक्त करते है; उस भाव को पाठक विश्लेषणात्मक अध्ययन अर्जित ज्ञान द्वारा कवि की मानसिक और वास्तविक स्थिति को जान लेते हैं। मानवीय चेतन मन दुर्बल एवं शक्तिहीन होता है, जिसका एक अवचेतन मन भी होता है जो चेतन मन की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली होता है और सब नियंत्रणों और सीमाओं को अस्वीकार करता है। मनुष्य–जीवन तो मान्यताओं और मर्यादाओं का पालन करने के लिए नियमबद्ध होता है लेकिन अवचेतन मन के लिए सभ्यता, संस्कृति एवं शालीनता अर्थहीन होते हैं। यह विरोधाभास ही कटुता की स्थिति उत्पन्न करता है। चेतन और अवचेतन मन में सामंजस्य न होने से ही जटिलताएँ, संघर्ष, विद्रोह, द्वन्द्व आदि उत्पन्न होकर मानसिक विकारों को जन्म देते हैं। ये सभी भाव समाज के प्रत्येक प्राणी में देखने को मिलते है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.421| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

हिन्दी काव्य रचनाओं में 'आत्म–तत्त्व' की उपस्थिति लगभग सभी रचनाओं के साथ होता है। फिर भी रचना में बहुत कुछ ऐसा भी होता है जो आत्म–तत्त्व से सम्बन्धित नहीं होता। पुनः जो कुछ भी आत्म–तत्त्व द्वारा बनता है वह पूर्णतया अभिव्यक्त नहीं हो पाता। फ्रॉयड ने भी मन के तीन स्तर भी स्वीकार किए हैं। ये हैं–चेतन, अचेतन तथा अर्धचेतन। चेतन मन द्वारा दमित की गई इच्छाएँ स्वप्नों द्वारा व्यक्त होती हैं और चेतन मन की इच्छाओं के लिए अचेतन सदा संघर्ष करता रहता है। परिणाम यह होता है कि अचेतन की इच्छाएँ अतृप्त होने के कारण चेतन में आने का प्रयास करती रहती हैं। समाज जिन दमित इच्छाओं को स्वीकार नहीं करता, कलाकार उन्हें ही रूप परिवर्तित करके कला का रूप देता है। ऐसा करते हुए वह न केवल अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति करता है, बल्कि आनन्द भी प्रदान करता है। यह आनन्द हमें जीवन की जटिलताओं से मुक्ति कराने में सहायता करता है। जैसे – 'महाप्रस्थान' में द्रौपदी और युधिष्ठिर की काम–कुण्ठाओं का हृदयस्पर्शी शब्दांकन हुए नरेश महेता ने लिखा है।

''कृष्ण उपस्थित होकर भी

अनुपस्थित क्यों रह गये?

क्यों नही किया मत्स्य का भेदन

पूर्ण–पुरुष ने?''[i]

मूलतः कलाकार दमित वासनाओं को ही साकार करता है। इस चिंतन में मानव–मन का विश्लेषण किया जाता है। काम–भावना मानव–जीवन की सबसे प्रबल भावना होती है लेकिन सामाजिक और मानसिक कारणों से इस भावना का दमन हो जाता है। ये ही दमित भावनायें जब उदात्त–उन्नत रूप धारण कर लेती हैं तो संस्कृति, कला, साहित्य, धर्म आदि के विकास–रूप में हमारे सामने व्यक्त होती हैं, जहाँ तक नरेश मेहता की काव्यकृतियों का प्रश्न है तो ये भी अछूती नहीं रह पायी है। यही काम–कुण्ठा व्यक्ति–कुण्ठा बन जाती है और उसके व्यक्तित्व को नगण्य बना देती है। 'महाप्रस्थान' के अर्जुन की भी यही विवश स्थिति हैं

''यह कैसी विवशता है

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.421| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

व्यक्ति की

समस्त शक्ति, संकल्प और पुरुषार्थ के होते

हुए भी

वह नगण्य हो जाता है। ''[ii]

नरेश के काव्य में प्रकृति, प्रेम, धर्म, संस्कृति, मानवतावाद, मानव–मूल्यों और जीवन की यथार्थ स्थितियों के विविधवर्णी बिम्ब मिलते हैं। इन विषयों से सम्बद्ध ढेर की ढेर कवितायें मेहता के काव्य–संकलनों में देखी जा सकती हैं। यहाँ उन्हीं विषयों से सम्बंधित उनकी काव्य–प्रवृत्तियों का विश्लेषरण किया जा रहा है वे मूलतः प्रकृति–प्रेमी कवि हैं। परंतु अपनी वैष्णवी प्रकृति, मानवतावादी दृष्टिकोण तथा उपनिषदों के प्रति आस्था के कारण वे भारतीय संस्कृति से जुड़े कवि कहे जा सकते हैं। उन्होंने पौराणिक आख्यानों के माध्यम से समकालीन संदर्भ, व्यक्ति के अंतर्द्वन्द्व, कुंठा, घुटन, दुर्बलता आदि का सशक्त चित्रण किया है। प्रकृति के प्रति कवि का विशेष प्रेम रहा है। दूसरा सप्तक की पहली रचना 'चाहता मन' में कवि ने छायावादी तरलता, उच्छ्वास तथा वैयक्तिक अनुभूति के अंतर्गत नवीन प्रयोगों का सहारा लिया है। एक प्रयोग देखिए–

"चाहता मन

तुम यहाँ बैठी रहो

उड़ता रहे चिड़ियों सरीखा

यह तुम्हारा श्वेत आंचल

किंतु अब तो ग्रीष्म

तुम भी दूर और ये लू।"[iii]

नरेश मेहता के काव्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने के बाद प्रतीत होता है कि कवि जन साधारण की उपभोक्तावादी संकीर्ण दृष्टि से दुःखी है। इसलिए कवि उस भोगवाद पर गहरा व्यंग्य करता है जो स्वार्थपरता तथा मूल्यहीनता पर टिका हुआ है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.421| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

'जन गरबा चैरवेति' में कवि सूर्य के साथ चलने की सलाह देता है, क्योंकि गति ही जीवन है। इसी प्रकार 'वन पाखी सुनो' काव्य संग्रह की अधिकांश कविताएँ प्रकृति और मानव के बीच सेतु का काम करती दिखाई देती हैं। कवि ने राजनैतिक कुचक्रों के अतिरिक्त सामाजिक विषमताओं पर भी प्रकाश डाला है। कवि का विचार है कि भले ही हमारा संविधान में लिंग, जाति, वर्ग, धर्म आदि विषमताओं को भुलाकर स्वतन्त्रता का दावा करता है। परंतु कवि 'शबरी' में संकीर्ण मानसिकता का पर्दाफाश करता है। कवि स्वीकार करता है कि आज दो सत्य हैं, दो आस्थाएँ हैं और दो संकल्प हैं। फलस्वरूप एक प्रकर्माणक व्यक्ति में अप्रामाणिक व्यक्ति पैदा हो रहा है। नरेश मेहता के काव्य की प्रमुख विशेषता यह है कि वे केवल युग सत्य का ही वर्णन ही नहीं करते, नये समाज के सपने ही नहीं संजोते, बल्कि समाधान भी प्रस्तुत करते हैं। कवि ने पौराणिक पात्रों के माध्यम से आधुनिक समाज के लिए आशा का संदेश दिया है। कवि युद्ध, दमन तथा अराजकता से पीड़ित मानव के लिए करुणा की स्थापना करना चाहते हैं। 'महाप्रस्थान' नामक रचना में युधिष्ठिर भीम से कहता भी है–

"करुणा मेरा धर्म है भीम

किसी भी संबंध

साम्राज्य या शक्ति के सामने

मैं इसे नहीं छोड़ सकता

विश्वास करो

धर्म के मूल्य पर

में स्वर्ग भी अस्वीकार कर सकता हूँ।"[iv]

नरेश जी ने अपने साहित्य की अनेक विधाओं के माध्यम से समाज को एक नया सन्देश देते है। जैसे–'एक बोध', 'तीर्थ जल' आदि कविताओं में सामाजिक, सांस्कृतिक प्रेरणा दी है, वे हमेशा स्वस्थ सामाजिकता के पक्षधर थे और गतिशीलता को जीवन का आवश्यक तत्व मानते थे। 'मेरा समर्पित एकान्त' में वे कहते भी हैं–

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.421| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

'' एक शाम होती है

जे आकाश में होती है

लेकिन

एक शाम होती है

जे नितान्त मुझमें घटती है ''[v]

नरेश मेहता ने भारतीय संस्कृति का अनुसरण करते हुए युद्ध को अमानवीय घोषित किया है तथा अहिंसा, करुणा और कर्मवाद के सिद्धांत की स्थापना की है। जैसे उन्होंने अपने काव्य के पौराणिक पात्र राम के माध्यम से कहलवाया कि यदि मानव की सभी समस्याओं का उत्तर युद्ध है तो उसे विजय नहीं चाहिए, न ही साम्राज्य चाहिए। यहाँ तक कि मानव के खून से सिक्त धरती से आती हुई सीता भी नहीं चाहिए। इस प्रकार की संस्कृति केवल राम की संस्कृति नहीं है, न ही कवि की संस्कृति है। बल्कि पूरे संसार की संस्कृति है। हमारे देश का हमेशा प्रयास रहा है कि चाहे विदेशी हमसे युद्ध कर पर हम हमेशा शांति का प्रयास करेंगे। 'महाप्रस्थान' में कवि ने इसी प्रश्न को उठाया है। महाप्रस्थान में ही कवि ने भारतीय संस्कृति के अनुसार करुणा को जीवन का महान मूल्य स्वीकार किया है। 'महाप्रस्थान' में युधिष्ठिर भीम से कहते भी हैं–

"करुणा मेरा धर्म है भीम।

किसी भी संबंध

साम्राज्य या शक्ति के सामने

मैं इसे नहीं छोड़ सकता।"[vi]

संपूर्ण संसार तथा विश्व संस्कृति का सर्वेक्षण करने के पश्चात कवि का यह विश्वास मजबूत हुआ है कि कर्म ही मानवता का मूलमंत्र हैं। कवि ने स्वीकार किया है कि सोवियत निवासियों ने कर्मशीलता को अपनाकर ही साम्राज्यवाद की बेड़ियों को तोड़कर नवजीवन की मशाल जलाई। इस संदर्भ में कवि स्वीकार करता है कि जब–जब मनुष्य की कर्मठ भुजाएँ परवश–कुंठित तथा कर्महीन हुई हैं, तब–तब वह मरा है। इसलिए

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.421| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

संसार के कल्याण के लिए और मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए, कर्म के प्रति निष्ठा आवश्यक है ।

'' सोने की वह मेघ–चील

अपने चमकीले पंखों में ले अन्धकार

श्रब बैठ गयी दिन के अण्डे पर

नदी वधू की नथ का मोती

चील ले गयी

गगन बीड़ से

सूरज–ग्वाला हाँक रहा है

दिन की गायें ।''[vii]

महेता के काव्य की सांस्कृतिक अनुभूति 'अरण्यानी से वापसी' कविता में देखा जा सकता है। कवि ने हिमालय का उल्लेख ऋषि–मुनियों की तपोभूमि के रूप में किया है, जो संन्यास की भावना रखने वाले प्राणी के लिए साधना का श्रेष्ठ स्थान है। संन्यास भाव धारण करके कवि भी हिमालय की शरण में है। जब उसमें पुनः अपनी कर्मभूमि में लौटने की भावना जाग्रत होती है, तब वह वापस अपनी कर्मभूमि में लौटने के पूर्व हिमालय की विशेषता बताता हुआ इस कविता में कहता है हिमालय की पावन भूमि पर पांडवों के कीर्ति स्तंभ की भाँति भोज पत्र उगे हुए हैं। वहाँ उच्च मनःस्थिति वाले योगियों जैसे देवादारु के वृक्ष लगे हुए हैं। वहाँ बहने वाले हिमनद गायों की त्वचा की भाँति चिकने और स्पर्श की इच्छा जगाने वाले हैं। वहाँ रहने वाले कुछ संन्यासी बर्फ के मखमली वस्त्र, तो कुछ छाल धारण करते हैं। वहाँ निवास करने वाले कुछ ऋषि–मुनि अपने शरीर पर औषधियों का लेप करते हैं। कुछ ऋषियों के तन से ब्रह्म–कमल की सुगंध आती है। हिमालय की नदियाँ यज्ञोपवीत जैसी है तथा हवा मधुर राग सुनाती है। हिमालय स्वयं इन्द्र के मुकुट की भाँति सुशोभित रहता है, जिसके आँचल में दिन–रात बादलों, हवाओं एवं ग्रह, नक्षत्रों द्वारा राजसूय यज्ञ संपन्न होता रहता है। इसी प्रकार 'सोनपर्वी दिन' का

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.421| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

सौन्दर्य भी कवि की दृष्टि को बाँध लेता है और वह उस दिन के सौन्दर्या कन में धूप, छाँह और सूर्यास्त तक के चित्र प्रस्तुत कर देता है । उतरते माघ का सोनपर्वी दिन कबूतर कंठ के आकाश में यशस्वी बन गया है तो उसकी पीले ज्वार सी धूप हलद सरसों बनकर नदियों की गोद में, कूलों व कछारों में यात्रियों की भीड़ की तरह एकत्र हो गई है । उसे यही धूप कार्तिकी प्रकाश मंक एकांत पत्तो सी प्रतीत होती है तो कहीं एक तितली और कहीं वही ईसाई भिक्षुणी बन जाती है । जैसे धूप का सौन्दर्य कवि के मानस को इतना लुभाता है कि एक कविता में वे कह उठते है– 'धूप एक संभावित सिम्फनी है.

आकाश की

पृथ्वी से आने वालों के लिये ।''[viii]

वस्तुतः कहा जा सकता है कि नरेश मेहता ने अपने काव्य में मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक आदि विषयों को उठाकर अपनी अभिव्यक्ति को सार्थक किया है। उन्होंने भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलूओं के माध्यम से गरिमामय भाव से सांस्कृतिक सौंदर्य का विश्लेषण किया है। मानवीय कुंठा से ग्रस्त व्यक्ति की मनोदशा का चरितार्थ वर्णन करते हुए दमित भावनाओं पर प्रकाश डाला है कि कैसे एक व्यक्ति दमित वासना के कारण समाज में विरोधाभास पैदा करता है। उन्होंने धार्मिक पात्रों के माध्यम से होने वाले विनाशक रूप का चित्रण किया है। प्रकृति के सौंदर्य को भी विविध पहलुओं के माध्यम से अपने काव्य में संजोया है। सामाजिक यथार्थ का मूल्यांकन करते हुए समाज में हो रहे परिवर्तन का विश्लेषण किया है।

सन्दर्भ–सूची

[i] नरेश मेहता , महाप्रस्थान पृष्ठ संख्या– 56
[ii] नरेश मेहता , महाप्रस्थान पृष्ठ संख्या– 90
[iii] नरेश महेता, बन पांखी सूनो, पृष्ठ संख्या – 22
[iv] नरेश मेहता , महाप्रस्थान पृष्ठ संख्या–54
[v] नरेश महेता, मेरा समर्पित एकान्त, पृष्ठ संख्या – 05
[vi] नरेश मेहता , महाप्रस्थान पृष्ठ संख्या– 25
[vii] नरेश महेता, मेरा समर्पित एकान्त, पृष्ठ संख्या – 41
[viii] नरेश महेता, बोलने दो चीड़ को, पृष्ठ संख्या – 52